श्री लक्ष्मीधर — विद्यामंदिर

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

अर्जुनगीता



प्रकाशक—नवलकिशोर-प्रेस (बुकडिपो)

CC-0 Chakradhar Joshi and Sons, Nakshara Vedhshala Library, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotr
har Joshi and Sons, Nakshara Vedhshala Library, Dev Prayag. Digitized

360

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

॥ श्रीः ॥

अर्जुनगीता ।



प्रकाशक

नवलकिशोर-प्रेस-बुकडिपो

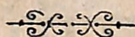
हज़रतगंज, लखनऊ.

CC-0 Chakradhar Joshi and Sons, Nakshara Vedhshala Library, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

अर्जुन-गीता ।



॥ दोहा ॥

हे यादव गोपीरमण, नील जलद तनु श्याम ।
अर्जुनगीता रचत हौं, करिके तुमहिं प्रणाम ॥ १ ॥
बिघ्नहरण सब सुखकरण, गणपति प्रथम मनाय ।
छन्दबद्ध गीता करौं, भाषामहँ सुखदाय ॥ २ ॥
मोक्ष हेतु है साधु कहँ, गीता केर बिचार ।
कथन नाम है ईश यश, कहौं बुद्धि अनुसार ॥ ३ ॥
गुरु के पदपंकज बिशद, तिनहीं को धरि ध्यान ।
सबै विश्व पावन करन, भाषा गीता ज्ञान ॥ ४ ॥

॥ चौपाई ॥

श्रीगुरुविष्णुकेचरणमनाऊँ।जेहिप्रसादगोबिंदगुणगाऊँ
श्रीकृष्णार्जुन कीरसबानी । गुरुप्रसाद कछुकहौंबखानी
एक समय आये यदुराई । अर्जुन संगम भा एक ठाई
धूप दीप लै आरति कीन्हा। चरणोदक माथे पर लीन्हा

CC-0 Chakradhar Joshi and Sons, Nakshara Vedhshala Library, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

हाथजोरि अर्जुन भय ठाढ़े। सहितभगति उरआनँदबाढ़े
संशय प्रभुएक हैचितमोरे। कहहुँ सो नाथ दोउकरजोरे
दीनदयाल देहु समुझाई। श्रेष्ठ मोक्ष कवने विधिपाई
कौनधर्मकीन्हें गतिहोई। सोमोहिंकहहु न राखहुगोई
स्थावर जंगम आदि बखानी। कीटपतंग चारिगुणखानी
चारिखानि प्रभु तुमहिंबनाई। सबसे श्रेष्ठ कौन यदुराई

॥ दोहा ॥

इनमें को अति श्रेष्ठ है, सो मोहिं कहहु बिचारि।
शरण चरण प्रभु राखहु, होहु प्रसन्न मुरारि ॥ ५ ॥

॥ चौपाई ॥

श्रीकृष्णहु बोले बिहँसाई। यहसंशय तोहिकहहुँबुझाई
कहैं रसाल बचन यदुबीरा। सबसे दुर्लभ जवन शरीरा
मानुषमें बड़ ब्राह्मण ज्ञानी। ब्राह्मणमें बड़ तपसि बखानी
तपसीसों बड़सुनहुकुमारा। मोर नाम जेहि प्राण अधारा
निसिबासरसुमिरेजोमोई। तेहिते बड़ औरो नहिं कोई

॥ दोहा ॥

एक नाम चित लाइ के, सुमिरे निसदिन मोय।
बिप्र तपस्वी अरु यती, तेहि पटतर नहिं कोय ॥६॥

CC-0 Chakradhar Joshi and Sons, Nakshara Vedhshala Library, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

॥ चौपाई ॥

अर्जुनबिनवै दोउकरजोरी। बिनतीकरहुँ मूढ़मतिमोरी
तुमप्रभुआदिअन्तसबजाना। मोपर कृपा करहु भगवाना
तुमजोकहतपसीबड़आहीं। नाम भजन के पटतरनाहीं
यहसंशयमोहिंकहहुबुझाईश्रीमुखसुनहुँतोमनपतिआई

॥ दोहा ॥

तपसी तप अधिकार बड़, ज्ञान ध्यान दृढ़ सोइ।
नामभजहिजोप्राणिनित, तेहिसमान नहिंकोइ ॥७॥

॥ चौपाई ॥

कहत रसाल बचन यदुराई। सुनअर्जुनतोहिंकहहुँबुझाई
योगरती सुन बृथा कुमारा। तासो बचन कहहुँ निरुपारा
बर्ष सहसदस बीता जबहीं। आसन दृढ़ तपसीहो तबहीं
अन्तप्राण त्यागे जो कोई। प्रेम पुरुष पुनि भेटे सोई
पुष्पकली बिकसे नहिं पाई। अन्तर बास कहाँते आई
रामनाम सुमिरणनहिं करहीं। कहु अर्जुन कैसे वे तरहीं
तपसी तप सुनु कुंतिकुमारा। योग यतीकर है ब्यवहारा

॥ दोहा ॥

नाम को महिमा जानई, साधै योग अघोर।
काया आछत पावई, सत्य बचन सुनु मोर ॥ ८ ॥

CC-0 Chakradhar Joshi and Sons, Nakshara Vedhshala Library, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

श्री चक्रधर - विद्यामंदिर देवप्रयाग (गढ़वाल-हिमालय) व्यवस्थापक जोशी

॥ चौपाई ॥

अबसुनुअर्जुनकहौंविचारी। रामभजनके सब अधिकारी
रामनाम सुमिरण जो करई। क्षणमहँ भवसागरसो तरई
रामनामभज जो चितलाई। धर्म अर्थ विद्या फल पाई
सोगृहस्थअगणितसुखपावहिंप्राणअन्तबैकुंठसिधावहिं
योगसुखदअतिकुन्तिकुमारा। तुमसेबचनकहौंनिरुपारा
योग साध जो प्राणी ध्यावै। तबहीं अमर परमपद पावै
भोगनहार तो पार न पावै। जैसे मारग अन्ध भुलावै
नामकीमहिमाकहतन आवै। क्षणइकभजे अमरपदपावै
अर्जुनबचनसुनतहमपाहीं। नामभजनसमजगकछुनाहीं
नामभजन सुमिरणजोकरई। भवसागर क्षणमहँसो तरई
राम नाम जग है आधारा। नाम लेत भवसागर पारा
भक्त हमार प्राणसम अंगा। सदा रहौं भक्तन के संगा
सदा फिरौं भक्तनके साथा। शंख-चक्र गदा लिये हाथा
गायसंगबछराजिमिरहई। छीरकीआशबछणकनहितजई
सुनु अर्जुनसमुझावों तोहीं। मोरनाम मोहन असमोहीं
नाम ब्रह्म चित जाने जोई। आवागमन न ताकर होई

CC-0 Chakradhar Joshi and Sons, Nakshara Vedhshala Library, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

॥ दोहा ॥

पारब्रह्म निश्चय करि, जानो कुन्तिकुमार।
तीनिलोक तारे सही, एक नाम है सार॥ ९ ॥

॥ चौपाई ॥

सुनहु पार्थभाषौं मैं तोहीं। नामभजै सो भेंटै मोहीं
तेहिते मोर कछू ना माया। अन्तकाल चित राखों दाया
भक्तहमार सदाहित आहीं। आयेयुग कछु अन्तर नाहीं
भक्त एक हमहींकर देखहु। भिन्न२ कबहूँ जनि लेखहु

॥ दोहा ॥

भक्त मोर मैं भक्त कर, सुनु अर्जुन ठहराय।
एक आत्मा जानहू, तोसों कहौं बुझाय॥१०॥

॥ चौपाई ॥

अर्जुन कहै सुनो यदुराई। यह तौ जानत हौं मनभाई
भक्तिहेतुमोहिंभेदकछुनाहीं। यह तो विदित अहैसबठाहीं
भक्त तुम्हार सदाहितआहीं। सो विचार अपने मनमाहीं
यहसबतोहिंमैंकहहुँबुझाई। सुनहुसोअर्जुनतुममनलाई
सदा रहहुँ सन्तन के साथा। शंखचक्र गदा लिये हाथा
और बात तोहिंकहौं बुझाई। मन वचकर्म सुनहुमनलाई

CC-0 Chakradhar Joshi and Sons, Nakshara Vedhshala Library, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

॥ दोहा ॥

मोर भक्त मोहिं चित धरहि, नाम जपै दिनरात।
तेहि कारण सुनु अर्जुन, छाँड़ि सकौं नहिं साथ॥ ११॥

॥ चौपाई ॥

जाके घर एक बालक होई। बिपतिपरेहुना छाड़िहिसोई
पुत्र बाप कर जानै सोई। तेहि प्रतिपाल करे सबकोई
सुतको पितु जो जानै सोई। बिपतिपरे नहिंछाड़हिंजोई
भक्त हमार धर्म के बापा। तेहिंसो अर्जुन कहे न आपा

॥ दोहा ॥

भक्त मोर जब बोलई, राधा कृष्ण मुरारि।
तेहि क्षण जिह्वा स्वर्गसे, उत्पति होय हमारि १२

॥ चौपाई ॥

अर्जुन बिनय करत करजोरी। पारब्रह्म सुनु बिनती मोरी
जो तुमकहतसोई परमाना। आदिअन्तमोहितकरजाना
श्रीमुख वचन मृषा को करई। हरिहर ब्रह्मा मेटि न सकई
मैंअतिदीननवचनअनंता। भक्तहिंअतिमानतभगवंता
कहैगोविन्द बचनहितकारी। सुनहुपार्थतुमहृदयविचारी
हरि प्रह्लाद देवजी आहीं। मम भक्तन के पटतर नाहीं
मैं जहँजाहुँ भक्त तहँ जाहीं। औरन्ह के आधीनसो नाहीं

CC-0 Chakradhar Joshi and Sons, Nakshara Vedhshala Library, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

चन्द्र सूर्य वायु अरु पानी । इनहूँ महिमा मोरि न जानी
इनकहँ अगम कछू है नाहीं । भक्त मोर पहुँचे क्षण माहीं

॥ दोहा ॥

भक्त मोर मोहि जानहीं, मैं तेहि जानहुँ बीर ।
भक्त मोर मैं भक्तकर, सुनहु पार्थ मतिधीर ॥ १३ ॥

॥ चौपाई ॥

शंकर सुमिरि परम पद पावहिं । नारद ब्यास सदा गुण गावहिं
चारिउ मुख ब्रह्मा गुण गावैं । सुमिरण करैं दर्शना पावैं
सुर नर मुनि आदिक गुण गावैं । आदि अन्त कोइ पार न पावैं
ध्रुव प्रह्लाद अमर पद पावहिं । भक्त हेतु प्रभु दर्श दिखावहिं
कलियुग में संतन सुख कीन्हा । घर बैठे दर्शन प्रभु दीन्हा
पीपा भक्त औ मीरा बाई । प्रेम सहित भेंटेउ चित लाई
रामानन्द कबीर गुसाईं । इनकी महिमा कही न जाई

॥ दोहा ॥

जेते कलि महँ भक्त भे, कहँ लगि करौं बिचार ।
सबकी आशा पूरई, यदुपति नन्दकुमार ॥ १४ ॥

॥ चौपाई ॥

गुरु बिरंचि विष्णु शिव आहीं । यामो अन्तर है कछु नाहीं
वृथा जन्म ताकर नहिं होई । गुरू शरण महँ जावै सोई

CC-0 Chakradhar Joshi and Sons, Nakshara Vedhshala Library, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

श्रीस्वामीत्रैलोक्यकेनायक।यदुनंदनसन्तनसुखदायक
सुमिरत राम सदा सुख पाई। अन्तकाल मुक्ती ह्वै जाई
गुरू अहैं जग सिरजनहारा। भवसागर से तारनहारा
गुरु के बिना अधमगति होई। भला बुरा चीन्हैं नहिं कोई
नाव बिना केवट का करहीं।गुरुबिनु फनको नहिं भवतरहीं
निगुरा हाथहिजेजल जोई। मद्यसदृश जानहु जल सोई
भक्तन के मुख मेरो बासा। हिरदै बैठि करौं परकासा
जोकछुबिष्णुमोक्षपदआहीं।जेतिकमानुषभोजनकरहीं
भक्त मोर होवै जो कोई। तुरत प्राप्त मो कहँ सो होई
जो मोहिं भक्तन लावै हाथा। उहै उच्छिष्ट कहै यदुनाथा
सो हम कहँ पहुँचै नहिं भाई। भक्त मोर पहुँचै क्षण जाई

॥ दोहा ॥

ब्रह्मज्ञान जो मन्त्र है, भगत हाथ सो आहि।
कहहु भक्त जो पावहीं, भलमन्दा कछु नाहि॥१५॥

॥ चौपाई ॥

जो कर मम भक्तन निंदाई। ताकर बंश नाश ह्वै जाई
तीन दिन तीन पक्ष बचोई। तीन वर्ष महँ बचै न सोई
जो इतने महँ दण्ड न देऊँ। चक्रगदा फिर हाथ न लेऊँ

CC-0 Chakradhar Joshi and Sons, Nakshara Vedhshala Library, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

॥ दोहा ॥

भगत कष्ट मोहिं ब्यापई, रोम रोम सब अङ्ग ।
तेहि कारण सुनु अर्जुन, छोड़ि सकौं नहिं सङ्ग॥ १६॥

॥ चौपाई ॥

सुनु अर्जुन मैं कहौं बिचारी । तुमतो मोर प्राणहितकारी
जो हम कहहिं सत्यहै सोई । पूर्वपुण्यबिनु भगतिनहोई
पद्मपत्र जौनीबिधि बिकसे । मोर भक्त पार्थ सुनु तैसे
उत्तम भक्ति उदितजब होई । वैष्णव नाम पाव तब सोई
तेहिमहँगुरुमुख सदाखराई । चरण छुवत पावतछय जाई

॥ दोहा ॥

अर्जुन कहैं गोसाँइ जू, चरण छुवत हौं श्याम ।
केतिक गुरु करिये प्रभू, केतिक लीजै नाम॥ १७॥

॥ चौपाई ॥

यहसुनिहर्षिकह्योबनवारी । देखहुअर्जुनमनहिं बिचारी
एकै गुरूबिष्णु सम आहीं । तीन लोक तिनपटतर नाहीं
एकै नाम सदा चित देहीं । चौदह भुवन वश्यकरि लेहीं
गुरूसोइजोलागेउ काना । तेहिकाजानेउविष्णुसमाना
गुरुको मंत्र भूल जो कोई । मुखते सिखे दोष नहिं होई
सत्य गुरू करिये दुइचारी । ज्ञानगुरू सब सिखैं विचारी

CC-0 Chakradhar Joshi and Sons, Nakshara Vedhshala Library, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

आनगुरूमुखकानजोलागै। कोटिजन्मशिरपातकलागै
जो मुख पाप गुरू कह कोई। माया लोभ करै जो कोई
गुरूशिष्य जानेभलकीन्हा। यमके पाशहाथमहँलीन्हा

॥ दोहा ॥

अर्जुन कहा गोसाँइ जू, कैसे जिय पतिआइ।
गुरू कान जेहि लाग सो, कैसे यमपुर जाइ॥ १८ ॥

॥ चौपाई ॥

सुन अर्जुनतोहिकहौंबुझाई। जोतुम्हारजीवहुपतिआई
पुत्र आनकर अपना करई। सो प्राणी कैसे निस्तरई
जैसे त्रिया सोहागिन होई। स्वामिछाँड़ि औरसँगजाई
पहिले दुइकुल नास करावै। जहाँ जाइ तहँ अपयशपावै
जगमें यश एकौ नहिं पावै। प्राणअन्तयमलोकसिधावै
दुइ नौका पगदेइ जो कोई। माँझधार में डूबै सोई
प्रथमै मंत्र गुरूको दीन्हों। तेहिते नेम धर्म ना चीन्हों
अवरो मंत्र देइ जो कोई। तौ जानहि दोष तेहि होई

॥ दोहा ॥

यह सब दोष गुरू कहँ, सीख न मानै कोय।
कुम्भीपाक नरकमहँ, निश्चय जावै सोय॥ १९ ॥

CC-0 Chakradhar Joshi and Sons, Nakshara Vedhshala Library, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

॥ चौपाई ॥

नाना बेद पढ़ै जो कोई। गुरुमुख वचन समान न होई
गुरुकहँपूछजायजहँ जानै।भयचिन्ताहिरदयनहिंआनै
चार बेद मुख पाठ बखानै। अन्तरगतिसोयहनहिंआनै
पढ़त पढ़तसबजन्मगँवावै।नामकीमहिमाजानिनपावै
निश्चयनाम जोचितहिलगावैक्षणइकभावपरमपदपावै
सिद्धसमाधि लगावै जोई। नामकीमहिमाजानतसोई
भूमिसमान दान जो करई। लक्ष योजन नाम जोधरई

॥ दोहा ॥

तीरथ ब्रत अरु यज्ञ करि, बहुत बिचारे बेद।
सहस्र योजन नामते, जाइ रहा सब भेद॥ २०॥

॥ चौपाई ॥

जिन ब्रह्मा सब सृष्टि सँवारी। नाभि कमल तेभयेहमारी
ब्राह्मण होय बेदसब पढ़हीं। मोर नाम जो चितमाँधरहीं
विद्या वेद न भूले सोई। भोजन रस जाने कस होई
स्वपनाभक्त मोर जो होई। तेहि समान अर्जुन ना कोई
यह संसार रामसे भयऊ। कोटि कोटि युग बीतत गयऊ
विष्णुकिमाया यह संसारा। राम नाम ते छुटहि कुमारा

CC-0 Chakradhar Joshi and Sons, Nakshara Vedhshala Library, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

सुनुअर्जुनमैंकहौं बखानी।नामकीमहिमाहमहुँनजानी
प्रथमहिं यह भाषा मैं तोहीं । नाम भजै सो भेटै मोहीं

॥ दोहा ॥

कहत खोरि मोहि लागई, सुनहु बचन भगवान ।
महिमा तुम्हरे नामकी, कैसे जानहिं मान ॥ २१ ॥

॥ चौपाई ॥

सुनुअर्जुनतैंमनदृढ़लाई । यह संसयतोहिं कहौं बुझाई
तीरथब्रतनकरैनर जोई । अमित पुण्य फल पावै सोई
आसनबैठि मोर गुण गावै। कोटितीर्थतेहिठौरहिपावै
लक्ष्मीपति सङ्गसों आहीं ।नामकी महिमाजानतनाहीं

॥ दोहा ॥

चन्द्र सूर्य अरु पवन जल, नवग्रह सकल नक्षत्र ।
माया मोरि न जानहीं, कोटि जपै जो मन्त्र ॥२२॥

॥ चौपाई ॥

नामसुमिरिशिवअमरजोभयऊजन्ममरणकरसंशयगयऊ
नामस्मरणमहीशजबकीन्हातिलसमानधरतीधरलीन्हा
रामनामसुमिरनध्रुवकीन्हा।पदवीअचलतेहिकारणदीन्हा

॥ दोहा ॥

राम नाम निश्चय करि, जानहु कुन्तिकुमार ।
चारि बेद मो अर्जुन, दुइ अक्षर है सार ॥ २३ ॥

CC-0 Chakradhar Joshi and Sons, Nakshara Vedhshala Library, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

॥ चौपाई ॥

सुनहु बचन देवन को देवा। अर्जुन कहत बिनय करि सेवा
केहि विधि मोग ति होइ गुसांई। सो मोहिं सोच कह्यो य दुराई
बहु पापी दोषी मैं सोई। भाषहु सो नहिं राखहु गोई

॥ दोहा ॥

केतिक पाप करै नर, कौन दण्ड है ताहि।
हिरदय गती बिचार कै, प्रभु भाषौ मोहिं पाहि ॥२४॥

॥ चौपाई ॥

अर्जुन सुनो कहौं मैं तोहीं। जो अति हित करि पूछे मोहीं
सतपालन प्राणी जो करहीं। लज्जित ह्वै यदुपति अब कहहीं
सहस पाप मुख बाहर होई। बचन कहै बूझै ना कोई
एक लख पाप करै नर जोई। कञ्चन काया कुष्ठी होई
दश सहस्र पातक जो करहीं। दुःखी रोगग्रसित ह्वै मरहीं
कोटि पाप करि अन्धा होई। भला बुरा चीन्है ना कोई
ताते पाप को यह फल भाई। बधिर होइ श्रवनहिं न सुनाई
एतना पाप वर्ण जो करहीं। घर घर भिक्षा माँगत फिरहीं
माँगै भीख न पावै दाना। ताके पाप को लेख न आना
पाप कोटि दुइ करजे प्रानी। सन्तति हीन अधम करि जानी

CC-0 Chakradhar Joshi and Sons, Nakshara Vedhshala Library, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

ताकर मुख भोरहिं जो देखै। महापाप अपने शिर लेखै
जोमुखदेखि करै असनाना। द्वादसपल सोनादेइदाना
अन्तकीबातकहबना तोहीं। महिमाकछुएकबेवराओहीं
तेहिके बचन उतर जो देई। महापाप अपने शिर लेई
दुइ असनान करे जो कोई। तब तेहि पाप ते छूटे सोई
शुभकारज बोले जो कोई। निश्चय कार्य नाशताहोई
अर्जुन बिनवै द्वौकर जोरी। सुनहुनाथएक बिनतीमोरी
यदुपतिसर्वपूज्य भगवाना। सबकर जानहुएकसमाना
निर्वंशी जेतक जग आहीं। धर्मवन्त कोउअहै किनाहीं
भला बुरा सब हैं यहि ठाई। सबकर भेद कहौ यदुराई

॥ दोहा ॥

उत्तम मध्यम नीच के, कह्यो भेद मोहिं पाहि।
तुमहिं बिना जगजीवन, औरहिपूछहुँ काहि ॥२५॥

॥ चौपाई ॥

सुनुअर्जुनमन ज्ञानबिचारी। यह संसार जे पार उतारी
जे शंका तुम पूछेहु मोहीं। सब वृत्तान्त कहौं मैं तोहीं
अपुत्रीक प्राणी जो होई। सत सङ्गति पावै नहिं सोई
भावभक्तिजोचितनहिधरहीं। निश्चयज्ञान हृदयमहँकरहीं

CC-0 Chakradhar Joshi and Sons, Nakshara Vedhshala Library, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

भावभजन महँजोचितलाई। ताकर पाप सबै क्षयजाई
कोई कथा जो मोरचलावै। तहाँजायनिश्चय चितलावै
भक्त हमार जहाँ गुण गावैं। तिनके चरणन शीश नवावैं
धर्म कर्ममहँ निश्चय रहहीं। मुक्तहोयसंशय नहिं भ्रमहीं
सर्व जीवमय करुणा राखै। सत्यहिं बोलै झूठ न भाखै
कामक्रोधको चित्त न धरई। गौ ब्राह्मण की रक्षा करई
हिरदय सदा मोरगुण गावै। अपुत्रीक बैकुण्ठ सिधावै
और बात कहों मैं तोहीं। मिलै न तृणबिन आज्ञामोहीं
अर्जुन भाष दोउ करजोरे। संशय एक उपज मनमोरे
जन्मतोआखिरजगमहँहोई। पाप कियेबिन रहै न कोई
तातजोमोहि भयउ सन्तापा। कैसे देह होय निष्पापा
पापिननामकहौसमुझाई। तिनकरपापकौनविधिजाई
और बात तोहि पूछौंस्वामी। तीनलोक के अन्तरयामी
गोहत्या प्राणी जो करई। केतिक दिनमें सो निस्तरई

॥ दोहा ॥

यह संशय जगदीश जू, मो मन उपजो आय।
भिन्न भिन्नके स्वामि जू, सो मोहिं कहो बुझाय ॥२६॥

CC-0 Chakradhar Joshi and Sons, Nakshara Vedhshala Library, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

॥ चौपाई ॥

अर्जुन सुनहु एक चितलाई। सब बृत्तान्त कहौं समुझाई
गो हत्या प्राणी जो करई। ज्ञानध्यान कीन्हें निस्तरई
तीरथ ब्रत न करे नर जोई। युग बीतेबिन पाप न खोई
त्यहा पात्र कहौं अधिकाई। चारो युग बीते त्तय जाई

॥ दोहा ॥

इन कर यह ब्यवहार है, सुन अर्जुन चितलाय।
ऋणहत्यागति कठिनहै, दिये बिना नहिं जाय ॥२७॥

॥ चौपाई ॥

अर्जुन कहै सुनो यदुराई। ऋण हत्या कौने बिधि जाई
दियेबिनाऋणछूटत नाहीं। तेहिमेंयहब्यवरा जो आहीं
साधु पुरुषऋण काढ़ै कोई। दराड भये बिन बचै न कोई
हमलवलीन प्राणिजोरहई। ऋण चिन्तानिसिवासरकरई
साधुसङ्गमहँ मों गुण गावै। प्रेम-भक्ति हिरदय में लावै
एक चित्त जो मोपर राखै। भलाबुरा नहिं मुखते भाखै
साहुको आवत देखै जबहीं। बिमुख होयरहे नहिं तबहीं
धायधूप ऋण मोचत जाई। जो कछु जुरै सो दे पहुँचाई
धायधूपऋणहोय न पारा। तेहिके दोष न कुन्तिकुमारा

CC-0 Chakradhar Joshi and Sons, Nakshara Vedhshala Library, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

जेहिके चित्तसदा असआहीं। छूटे ऋण संशय कछुनाहीं
साहु सो साँच रहै मनमाहीं। मन्द होय तो पहुँचे ताहीं
तेहिप्राणीकोयमनहिंलेहीं। अगलाजन्मौंसुखितसन्देहीं
साहुकार जो धरता होई। तो पाये खाये सुख सोई

॥ दोहा ॥

ऋणकर यह बृत्तान्त है, सुन अर्जुन चित लाय।
जहाँ आश है जाहि कर, तहाँ देउँ पहुँचाय ॥२८॥

॥ चौपाई ॥

अर्जुन कहै सुनो भगवाना। यह तो उत्तम कर परमाना
उत्तमबुद्धिऋण करजा होई। पुनि उत्तमगति पावै सोई
ऋण काढ़ै अस पापी जाना। सोकसगति पावैभगवाना

॥ दोहा ॥

धर्मवन्त ऋण काढ़ई, पावउँ ताकर अन्त।
पापीजन जो लेइ ऋण, कहौं तासु बिरतन्त ॥२६॥

॥ चौपाई ॥

अर्जुनसुनोएकशुभबानी। यहबृत्तान्ततोहिंकहौंबखानी
ऋणकोकाढ़ि दान दे कोई। मिथ्याअहैउचित नहिं सोई
ऋणकाढ़ै पाले परिवारा। सो मिथ्या नहिंआर्यकुमारा
ऋण काढ़ै झूठा प्रण करई। नीच सङ्ग नारि परिहरई

CC-0 Chakradhar Joshi and Sons, Nakshara Vedhshala Library, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

चौंकनचौंकनफिरेउतंगा।नारिछोड़िनिजकरिपरसंगा
साहुको आवत देखे जबहीं। जाय छिपाय रहे पुनितबहीं
खायपिये ऋणदेननचाहै। यहकरपापसोनिशिदिनराहै
प्राण अन्त तेहि यम ले जाई। तेहिकर अस्तुतिकरै बनाई
चमरा काटिके बेंत लगावै। पंथ माहि घिसियावत लावै
पहिले लै सेमर में बाँधै। तप्तफार तेहि मुख में साधै
लोह की लाठी से पिटवाई। अंग अंग काँटा चुभवाई
तहवाँते पुनि बेगि लै आवै। तावापर तेहि पुनि बैठावै
तेहिके तर पुनिआगलगावै। ऊपर तेल आँचि ढरिकावै
कष्ट अनेक देहि तेहि भारी। नरककुण्ड में राखहिडारी

॥ दोहा ॥

केतिक दिन तेहि नरकमहँ, तहँ ते काढ़ि पुनि लेहिं।
अङ्ग भङ्ग करके पुनि, जन्म नीच घर देहिं ॥३०॥

॥ चौपाई ॥

पुनिवह जगमें से निस्तरई। धरता होय वहीं सो मरई
आधा अंगहि मोरत आई। तिहिते अन्त कहा समुझाई
तीन लोक मेरे ऊपर माहीं। सबकर तन्त्रमन्त्रमोहिपाहीं
यह संसार जहाँ लगि होई। मम आज्ञाबिन अहै न कोई

CC-0 Chakradhar Joshi and Sons, Nakshara Vedhshala Library, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

नित उठिभोजनसबको देऊँ । सबकीखबरसाँझकोलेऊँ

॥ चौपाई ॥

जौन अहार जन्तु जो खाई । ताकर तैसे देउँ पहुँचाई
मम आज्ञाबिन अन्न न पावै ।कोटिभाँतिकरियुक्तिबनावै
सबको आस हमारी आही । सुनुअर्जुनतोसोंसतकाही
कीटपतङ्ग में बास है मेरा । मैंही हौं रक्षक सब केरा

॥ दोहा ॥

एक आत्मा जानहु, दूसर तिहुँ पुर नाहिं ।
कहों गुप्त कहि प्रगट है, सुनु अर्जुन मन माहिं ॥३१॥

॥ चौपाई ॥

अर्जुन कहै दोउ करजोरी । आदि अन्तशरणागततोरी
श्रीयदुपति त्रिभुवन के कर्ता। दुष्ट दलन सन्तनदुखहर्ता
आदि अन्त भक्त भयहारी। सब में व्यापक देख मुरारी
जो तुम कहो सोइ मैं जाना । औरहुकथाकहोभगवाना

॥ दोहा ॥

धर्म जन्म कवने विधि, कवने जनमैं पाप ।
सो स्वामी कह देउ मोहिं, उपजा बड़ संताप ॥३२॥

॥ चौपाई ॥

धर्म पुराय कीन्हें यश होई । दया करै तो जन्मे सोई

CC-0 Chakradhar Joshi and Sons, Nakshara Vedhshala Library, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

क्षमाते धर्म चलै यश होई । लोभ तेज जो जन्मे सोई
काम वस्तु सम्पूरण होई । उत्तम गति पावे पुनि सोई

॥ दोहा ॥

यहि बिधि जानो अर्जुन, पाप पुण्य उत्पाति ।
तुम तो मोरे प्राणहित, कहौं वेद बहु भाँति ॥ ३३ ॥

॥ चौपाई ॥

अर्जुन ठाढ़ भये प्रभु आगे । हाथ जोरिके पूछन लागे

॥ दोहा ॥

बेदन बिषै बिचारि के, मोहिं कहो नन्दलाल ।
कवन कर्म के कीन्हें, प्राणि होय चण्डाल ॥ ३४ ॥

॥ चौपाई ॥

अर्जुनसुनहु कहत भगवाना । इतनीबातसुनापरमाना
ब्राह्मण ब्रह्म कर्म नहिं राखै । देवलोकसबही प्रतिभाखै
बिना दत्तनी भोजन करई । सोचाण्डालकृष्णअसकहई
देवन पूजे बिन पग धोये । अर्जुन सुनचण्डालहैसोये
जाके मात पिता बृध होई । सेवा करै पुत्र ना सोई
ताहीकोतुममृतकरिजानौ । अर्जुनसोचाण्डालहिमानौ
पूरण गर्भ नारि जो अहई । ताकर पुरुष सङ्गतेहिकरई
हत्या तुल्य पाप है ताही । अर्जुनसुनचाण्डालसोआही

CC-0 Chakradhar Joshi and Sons, Nakshara Vedhshala Library, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

आगि लगाय के देइजराई।सुराअमिषनिशिबासरखाई
महापाप निश्चय सो जाना। सो अर्जुनचंडालसमाना
बच्छा गाय बिछोह करावै। सो प्राणी चण्डाल कहावै
अर्जुनसों ये कहैं नन्दलाला। पच्छिन में कागाचंडाला
पशुअन में गर्दभ को मानो। बनस्पतिन में ताड़ बखानो
पानी पियत गाय खेदवावै। सो प्राणी चंडाल कहावै
तेल लगाय न कर अस्नाना। सोप्राणीचंडालसमाना
रति करि जो नकरै अस्नाना।सोप्राणीचंडालसमाना

॥ दोहा ॥

अर्जुन कहा गोसाइँजू, यह जानत कछु नाहिं।
कवन दान के दीन्हें, कवन पुण्य है ताहि ॥ ३५ ॥

॥ चौपाई ॥

हितकरिअर्जुनपूछेहुमोहीं।दानकीबिधिभाखहुँमैंतोहीं
दश गोदान देइ जो कोई। एक धेनु फल पावै सोई
धेनु दानदश दे जो कोई। साँड़ एक दीन्हें फल होई
दश साँड़ दान जो देई। कपिला एकदिये फल होई
कपिला दान करे दश जोई। कन्यादानदियेफलहोई
दशकन्या दे दान जो कोई। बिगहाभूमिदियेफलहोई

CC-0 Chakradhar Joshi and Sons, Nakshara Vedhshala Library, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

दश बिगहा भूमि दे कोई । ज्ञान ध्यान फलपावैसोई
दानध्यानकहिज्ञानकलेषा।आसनउनकरसुनियविशेषा

॥ दोहा ॥

जेतिक दान करै नर, तेहि फल पावै सोइ ।
शालिग्राम के दान सम, और दान ना कोइ ॥३६॥

॥ चौपाई ॥

सुनु अर्जुननिश्चयकैभाखौं।सोतुमनिजहिरदयमोराखौ
आसन भेद जोपूछहुमोहीं। सो सब भेद कहौं मैं तोहीं
बस्तर आसन ध्यान लगावै।दुखीहोयकछुफलनापावै
पत्थर आसन जपे जोकोई । सुनु अर्जुन सोरोगीहोई
भूमि आसन जपेजो कोई । ताको कछु पुनिपापनहोई
यहिआसनकरयहगुण होई। निश्चयअर्जुनमानोसोई
अवरो आसन सुनो कुमारा । उत्तम गति पावै संसारा
मृगछाला आसन बैठावै । करै भजन मुक्तिगति पावै
जो घर बैठि जपे मम नामा। सुत कलत्र देऊँधनधामा
मुनिनकेरआसनजोआहीं। मनुष्यमहिमाजानतनाहीं
कुशआसनजोध्यानलगावै । ज्ञानी होयसिद्धफलपावै
काम क्रोध तजि ध्यावै जोई । नेमधर्म फल पावै सोई

CC-0 Chakradhar Joshi and Sons, Nakshara Vedhshala Library, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

॥ दोहा ॥

तब अर्जुन कर जोरिके, कहा सुनो यदुराय ।
सदा संयोग न पावै, ताको कौन उपाय ॥ ३७ ॥

॥ चौपाई ॥

कृष्णकहहिंअर्जुनहिंबुझाई।सदासंयोगआसननहिंपाई
तेहिकरएकअहैपरकारा । सो मोसे सुनु कुन्तिकुमारा
तृण एक जहाँ तहाँते लावै । द्वादशअंगुलप्रमाणबनावै
अर्जुन कहै दोउ करजोरी। और कछु बिनतीप्रभुमोरी
आसनबिधिपूछेउँभगवाना । तुमप्रसादपायउँब्रह्मज्ञाना
भजन भेद भाषौ यदुराई। कौनी भाँति कौन फल पाई
कौनी माल कौन फलहोई ।सोमोहिंकहौनराखौगोई

॥ दोहा ॥

सुनहु स्वामि जगजीवन, यदुपति नन्दकुमार ।
भजन भेद जिमि जानहु, श्रीमुख कहौबिचार॥ ३८॥

॥ चौपाई ॥

सुनुअर्जुननिश्चयचितलाई।भजनभेदतोहिंकहौंबुझाई
अंगुल रेख भजन जे करई। अष्टगुणाफल प्राप्तिसोकरई
मोतिनमालभजनजोकरई।दशगुणफलतेहिनरकोहोई
खमणिमालजपैजोकोई। द्वादश गुणफलताकोहोई

CC-0 Chakradhar Joshi and Sons, Nakshara Vedhshala Library, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

कमल माल जपै जो कोई । सहसगुणाफलताकोहोई
सुवरणमालाजपै जो कोई । एक कोटि फलताकोहोई
कुशकाँड़ी माला जप जोई। दशकोटि फल ताकोहोई
पदमफलमालजपै जो कोई । पन्द्रह लक्षताहि फलहोई
चन्दनमाला जपै जो कोई । दश सहस्र कोटि फलहोई
रुद्राक्ष माला जपै जो कोई । बारह कोटि ताहि फलहोई
तुलसीमालजपैजोकोई । ताकरफलमोगिनती न होई

॥ दोहा ॥

भजन भेद सब भाषेहूँ, सुनु अर्जुन चितलाय ।
और कछू जो पूछहू, सो मैं कहौं बुझाय ॥ ३६ ॥

॥ चौपाई ॥

अर्जुन कहै सुनौ बनवारी । औरो कहोपिताम्बरधारी
केहिके छुये दोष है स्वामी । सोबिचारकहु अन्तर्यामी
सुनुअर्जुन तू एकचितलाई । यहसंशयतोहिकहौंबुझाई
मक्खी विष्णुअंश जोआही। तेहि बैठे कछुदोषहैनाहीं
देवन के भोजन छुइ जाई। है निश्चितसोभोगलगाई
भक्ष्याभक्ष्य मँजारी खाई। वाही मुख भोजन छुइ जाई
यहिबातन कछु दोषनआवै।है निश्चितसोभोगलगावै

CC-0 Chakradhar Joshi and Sons, Nakshara Vedhshala Library, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

निजनारीसंगशयनजोकरहीं।अंतकियेकछुदोषनहोहीं
बात कहे मुख थूकै जोई। तेहिकर दोष कछू नहिंहोई
हाथ एक तृण तोरै जोई। चाण्डाल मानव सो होई
अर्जुन सत्य सुनो हम पाहीं।तेहिकरदोषकछू नहिंआहीं
अर्जुन कहै सुनो भगवाना। एक वृक्ष पर आछे जाना
नाव एक दिशि हाँडी होई। अन्त राँध राखै जो कोई
तेहिकरदोषकछू नाअहहीं।निश्चयवचनकृष्णजोकहहीं
ब्राह्मण केहि नारि जल देई। भिक्षा अपने बासन लेई
दोष न अहै कृष्णअसकहहीं। द्वादशअंगुलबीचजोरहहीं
सेज भूमि पर सोवत ओई। एक चण्डाल शूर जोहोई
राजा पीठ पर बैठे सोई। ताकर दोष कछू ना होई

॥ दोहा ॥

भजन भेद सब भाषेउँ, सुनु अर्जुन चितलाय।
औरहु जो कुछ पूछहू, सो मैं देउँ बताय॥ ४०॥

॥ चौपाई ॥

अर्जुन कहै सुनो भगवाना। तुमहींछाँड़िनजानौंआना
इनको भेद कहो यदुराई। जिनकर बंश नाश हुइ जाई

CC-0 Chakradhar Joshi and Sons, Nakshara Vedhshala Library, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons Dev Prayag. Digitized by eGangotri

॥ दोहा ॥

कवन पाप से स्वामिजू, बंशनाश होइ जाय।
कृपा करो गोसाइँजू, मोहिं कहो यदुराय॥ ४१ ॥

॥ चौपाई ॥

सत्यबचनसुनुकुन्तिकुमारा।यहिबातनकरकरोबिचारा
जौन नारिके सुतनारहई।निशिदिनपरपुरुषनमनधरई
श्रीस्वामीको चित्त न लेवै। बात कहत उत्तर सो देवै
पीहर दुइकुल अपयश पावै। प्राण अंतयमलोकसिधावै
और कथा सुनु अर्जुन सोई।बंशनाश जेहिकारणहोई
सत्यबचन बोले नहिं प्यारा। चित्त मों बसे पराई दारा
सभा बैठि परनिन्दा करई। कानलगाइकै नृपसोंकहई
परधन काढ़ि द्रव्य जो देई। सो संताप आपनो लेई
जो पराइलेइ सुख सो खाई। ताकर बंशनाश होइजाई
ऊँच नीच ना करै बिचारा। सदा अनीत संग परदारा

॥ दोहा ॥

परजहिं सदा सतावई, पाप पुन्य नहिं जान।
बंशनाश होइ तेहिकर, सुन अर्जुन परमान॥ ४२ ॥

CC-0 Chakradhar Joshi and Sons, Nakshara Vedhshala Library, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

॥ चौपाई ॥

अर्जुन सुनोएकचितलाई। जेहिघर गैयांहोय अधिकाई
गर्व करै तो सकै न रोकी। रोगब्याधिजोगायनब्यापी
ताको बंश नाशहोइ जाई। यह जानो निश्चय तुमभाई

॥ दोहा ॥

अर्जुन कहा गोसाँइजू, पायउँ सबकर अन्त।
पाँचरत्न जग कहत हैं, वर्णहु सब भगवन्त ॥४३॥

॥ चौपाई ॥

श्रीगोविन्दकहैंशुभबानी। सुनुअर्जुनतेहिकहौंबखानी
ठाकुरको यह सबसुख देई। दुख संकट अपने शिर लेई
मीठाबचन मोसबदिनभाखै। दया धरम हिरदय में राखै
भावभक्ति सोभाषण करई। करै सहाय बचन सम करई
रै अकालप्रजा प्रतिपालै। दुःख परै तो सत्य न घालै
भक्ति होत तो दे पहुँचाई। आशनिराश कबहुँ ना जाई
ब्राह्मण गायकी रच्छा करई। नेम धर्म अपने मन धरई
उत्तम नारि गाँव में देखै। जस कन्या अपने घर लेखै
दंड भंग करि कछु ना लेई। विपनि द्रव्य कबहूँ ना देई

॥ दोहा ॥

यह लच्छन कर ठाकुर, भक्ति भाव कर जान।

CC-0 Chakradhar Joshi and Sons, Nakshara Vedhshala Library, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

एक रत्न सो अर्जुन, सत्य कहैं भगवान ॥४४॥
जौनत्रियानिश्चयचितहोई। धर्म कर्म हित राखै सोई
स्वामी केर करै नित पूजा। और पुरुष नहिं जानै दूजा
मात पिता स्वामी कर होई। अपनाई करि जानै सोई
ब्राह्मण गाय देवसम जानै। यह अपनेमननिश्चय मानै
भिक्षुक आयनिरास न जाई। जो कुछ जुरै सो देइ मँगाई
पतिव्रता सो सती कहावै। आप तरै दुइ कुलन तरावै

॥ दोहा ॥

यहि लक्षण की भामिनी, सुनु अर्जुन चितलाय।
एक रत्न सो जगत महँ, सत्य कहै यदुराय॥ ४५ ॥

॥ चौपाई ॥

जो नर होय समर में शूरा। धीरज साहस मुखको पू[illegible]
ताकरस्वामि जो रण में हारै। स्वामी को संकट जो टार[illegible]
लागो घाव न मानै हारी। संकट परे देवता चारी
जियत रहै तो फेरि ले आवै। जूझै स्वामी कार्य्य सिधावै

॥ दोहा ॥

एक रत्न अस शूरमा, अर्जुन जानो सोय।
जियत जगत यश पावई, मुये मुक्तिपद होय ॥४६॥

CC-0 Chakradhar Joshi and Sons, Nakshara Vedhshala Library, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

॥ चौपाई ॥

भाग्यवन्त नर जगमाँ कोई। अन्न चित्त सम्पूरण होई
प्रथम सावधान गृह रहई। अहङ्कार कबहूँ नहिं करई
अपनेकुटुम्बजहाँलगि जानै। मायागर्व बीचनहिं आनै
भाई बन्धु और जो कोई। यार दोस्त बैरी किन होई
बाहर के आवै मेहमाना। ताको बिदा करै सनमाना
सबकर आदर करै बनाई। बिदा करै बहु प्रीति बढ़ाई
दुखितदेखिचितदयाजोकरई। भक्ति हमार हृदयमों धरई
गोब्राह्मण देवन सम जानै। कुलकुटुम्ब की लाजनमानै
भक्तहिं देखि विष्णुसम पूजै। अवर देव नहिं कबहुँनदूजै
पर निन्दा परवाद न जानै। परनारी माता सम मानै
संयमदानधर्महुँ कछुकरहीं। कछु २ वेद पुराणहुँ सुनहीं

॥ दोहा ॥

यह लच्छन धनवन्त कर, सुनहु सो कुन्तिकुमार।
एक रत्न जग जानिये, निश्चय वह संसार॥४७॥

॥ चौपाई ॥

रविशशिभक्त एक सम आही। तुमतोजानत हौमनमाहीं
तेहिकर अब मैं करौं बखाना। मैं अपने मन तेहिका जाना।

CC-0 Chakradhar Joshi and Sons, Nakshara Vedhshala Library, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons- Dev Prayag. Digitized by eGangotri

नाम हमार जपै दिनराती। ताको तुम जानहु बहुभाँती
अर्जुन कहै सुनो यदुराई। भक्त तुम्हार प्यार सब गाई
नाम तुम्हार जपै दिनराती। तेहिनरकोमानहुँ बहुभाँती

॥ दोहा ॥

जहँ लगि प्राणीमात्र है, सब में बास तुम्हार।
तिनमहँ कोहै प्रिय तुमहि, सो मोहिंकहो बिचार॥४८॥

॥ चौपाई ॥

सुन अर्जुन मैं भाषौं तोहीं। जानहु सत्य मृषा नहिं होहीं
आनन्दित भिक्षानित करई। सोप्राणी मोकहँ प्रिय अहई
नारीसतीजात महँ जोई। तेहि पठवा मानब नहिं कोई
अर्जुन बहुरि कहै करजोरी। पारब्रह्म सुनु बिनती मोरी
और एक संशय प्रभु मोरे। बिनवौं नाथ दोउ कर [illegible]
नाथ पवन जो आवै जाहीं। ताकर मर्म कहौ हम प[illegible]

॥ दोहा ॥

पवन गवन जहँ जानहू, सो मोहि कहौ बुझाय
कवन काम गोसाइँजू, कवन काहि लग जाय॥४९॥

॥ चौपाई ॥

सुन अर्जुनतोहिकहौंबुझाई। कौनकाम कहाँ लगिजाई
कवने आसन मम जप करहीं। द्वादश अंगुल मारुत बहहीं

CC-0 Chakradhar Joshi and Sons, Nakshara Vedhshala Library, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

अर्जुन गाढ़ होन की बारी । सोरह अंगुल बहै बयारी
साथ चलै जब अर्जुन बीरा । सोरह अंगुल बहै समीरा
बात कहत सब पवन सयाना । छत्तिस अंगुल करै पयाना
काम करत जब प्राणी पावै । एकतालिस अंगुल श्वासा धावै
जब प्राणी को निद्रा आवै । चौदह अंगुल श्वासा धावै
जब नर नारी सों रति करहीं । बावन अंगुल श्वासा बहहीं
जब प्राणी को रोग सतावै । चौंसठ अंगुल श्वासा धावै
बिंशति जितने पवन प्रकाशा । तिन का जानहु कालहि ग्रासा

॥ दोहा ॥

पवन गवन के अर्थ सुनि, वहाँ जन्म वृत्तन्त ।
सब शरीर कै अन्त प्रभु, नर सों पाव न अन्त ॥ ५० ॥

॥ चौपाई ॥

[illegible]यम अर्जुन यह मनहिं बिचारी । अरु अस्तुति बिनती अनुसारी
[illegible]बिनती सुनहु मोरि यदुराई । व्यास जन्म सुधि मन मोहिं आई
ब्रह्मा का नाता सो आहीं । तुमसों भेद छिपी कुछ नाहीं
यह संशय मोहिं नन्दकुमारा । केवट तनय कहै संसारा

॥ दोहा ॥

आदि पुरुष तुम स्वामिजू, सबकर जानहु अन्त ।
व्यासदेव केवट तनय, तौन कहहु बिरतन्त ॥ ५१ ॥

CC-0 Chakradhar Joshi and Sons, Nakshara Vedhshala Library, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

॥ चौपाई ॥

सुनुअर्जुनसमभावोंतोही।जेहिबिधिजन्मब्यासकरहोही
सरजू नदि पश्चिम में आई। आपन रूप धरा तहँ ठाई
ताही समय राज गृह गयऊ। बिधिसंयोग भेंट तहँ भयऊ
युवती सुघर देखियत माहीं। मोहित भए मनहिं हरषाहीं
राजापुनितेहिकरधरलीन्हा। हर्षवन्त ह्वैरति रसकीन्हा
राजाबहुरिअन्तःपुरगयऊ।केतिकदिनवहिबातनभयऊ
कन्यादान दीन जब आई। ताकहँ तबै दीन्ह पहुँचाई

॥ दोहा ॥

सो निरबंशी राजा, कन्या हितकर लीन्ह।
सो पुनि जाय कन्तपुर, अनन्द बधावा कीन्ह॥५२॥

॥ चौपाई ॥

अर्जुन सुनो मोर सतभाऊ। राखेउ भवन कन्याकर[illegible]
वर्ष सात की भई कुमारी। बरचिन्तानृपमनहिबिचा[illegible]
दासराज राजा इक आही। कन्या ताहि पुनीत बिवाही
करि बिवाह राजा लै आवा। मुद समेत नृप बिदा करावा
आश्विनमास पक्ष उजियारा। पितृकाज करहिं संसारा
जहाँ पितृकाज नृप होई। तेहि दिनरजौवतीभइसोई
सुनिराजाजियचिन्तालाई। दरवानी कहँलीन्हबुलाई

CC-0 Chakradhar Joshi and Sons, Nakshara Vedhshala Library, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

पण्डितजनसब लावहु जाई। ब्राह्मण कहैं करा सा जाइ

॥ दोहा ॥

पण्डित ऋषी बुलाइके, भाषा सब व्यवहार।
पितृकाज तिय रजवती, तेहिकर कवन बिचार॥५३॥

॥ चौपाई ॥

ब्राह्मण कहैं पितृकर काजा। वर्ष राज महँ होवे राजा
आजुहि पितृकाज नृप होई। और लगन धरि सकै न कोई
पितृकाज सब बिप्र लगाये। राजा तुरत शिकारहिं धाये
अर्जुनसुनु बिधिकेसंयोगा। हरिणाहरिणिकरहिरसभोगा
देखतमोहितभयउभुवारा। रतिपतित्रसितभयोतेहिबारा

॥ दोहा ॥

[illegible]ा एक बनाइ नृप, बीज धरा तेहि माहिं।
[illegible]ल्है एक बुलाय के, सौंप दीन्ह तेहि पाहिं॥५४॥

॥ चौपाई ॥

राजा कहै चील्ह लै जावहु। राख न रानी कहँ पहुँचावहु
कहेउ बीच राखहु घर सोई। गर्भ रहै तो बालक होई
इहिविधिचील्हतुरतलेजाई। नदीबीचएकआपति आई
एक चील्ह ऊपर ते आई। दोना आधा फार लै जाई
दुइबुन्दबीजनदीबिचपरऊ। मछलीएकताहिलिलिगयऊ

CC-0 Chakradhar Joshi and Sons, Nakshara Vedhshala Library, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

गर्भवती मछली भै वाई । खेलि शिकार राज घर जाई
पितृकाजतबकीन्ह मुवारा । जो कछु राजनको व्यवहारा
यहि बातन कछुअन्तरपरी । केवट जाल मछली सो धरी
लै मछली राजाकहँ दीन्हा । राजा बहुत प्रेमकरि लीन्हा
कहेउकिमछलीउत्तमआही । जेवन हेतु बनावहु याही
लैकरमीन बनावनगयऊ । तब इक बालक कन्या भयऊ
हँसिकेबालकभाष्योतबहीं । बोल्योनृपजोराखहु अबहीं
नृपदासीतबअचरजकीन्हा । मछलीगर्भउतरकसदीन्हा
राजा मछली फेरि मँगावा । अपने आगे बैठि चिरावा
राजा बैठे देखहि ताही । इक बालक इक कन्या आही
राजा बहुत हर्ष मन कीन्हा । बालकलैरानी कहँ [illegible]
केवटकहँ नृप लीन्ह बुलाई । लै कन्या ताही स[illegible]
अपुत्रीक केवट सो आही । कन्या देखि हर्ष मनमाही
जो बालकराजा लैराखा । मच्छनारायन नामसोराखा
राजा भयउ राजा के अन्ता । अबसुनुकन्याकरविरतन्ता
कन्यारत्नजो केवट लीन्हा । नामअगौतीतेहिकोदीन्हा

॥ दोहा ॥

तेहि कन्या कहँ अर्जुन, केवट अस मन दीन्ह ।

CC-0 Chakradhar Joshi and Sons, Nakshara Vedhshala Library, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

जीवन आसा जानिके, सेवा बहु बिधि कीन्ह ॥५५॥

॥ चौपाई ॥

सेवा करत बहुत दिन गयऊ। यहि बिधि वर्ष सातकै भयऊ
केवट घाट करै घटवारा। जो कोउ जाय उतारै पारा
बैठि नाव पर कन्या अहई। आपन कर्म सिखावत रहई
सुख सुख लोंके तिक दिन गयऊ। एक दिन केवट व्याधित भयऊ
केवट व्याधि व्यथहि महँ धावा। घाट सौंपि कन्या कहँ आवा
कन्या बैठी अपने भाऊ। विधि संयोग अग्निशर आऊ
मुनि पाराशर आसन जायो। देखे केवट घाट न पायो
फिरि देखो कन्या एक आही। तब ऋषि बचन कहा तेहि पाही
[illegible] कहेउ देउँ कछु तोहीं। नदी पार उतार तैं मोहीं
[illegible] कहै अन्य ना लेऊँ। बैठहु नदी पार करि देऊँ
[illegible]ता दुखित हैं मोर गोसाँई। दया करो व्याधि क्षय जाई
बोले ऋषी भयउ तव काजा। पिता तुम्हार नीक भा आजा
तुम अपने मन सोच न आनहु। बचन हमार सत्य करि मानहु
पिता तुम्हार नीक ह्वै जाई। आपनि अव शिरोग क्षय पाई

॥ दोहा ॥

इतना भाषि ऋषीश्वर, बैठि नाव पर जाय।

CC-0 Chakradhar Joshi and Sons, Nakshara Vedhshala Library, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

कन्या बैठी डाँड़ लेइ, दीन्हेसि नाव चलाय ॥५६॥

॥ चौपाई ॥

थोरी दूर नाव जब आई। उत्तम बात ऋषी चित लाई
उत्तमघड़ीअहैयहिबारा। और नारि नहिं साथ हमारा
यहि बेरा जो सोरतिमाना। होवैसुतत्रिलोकजेहिजाना
चारि बेद मुखपाठ बखानै। अष्टादश पुराण सो जानै
तबहिं परस्पर कह्योबिचारी। सुनहु बचन केवट को बारी
जगतमध्यतुम्हारयशरहहीं। मानहुबचनजोसाँचहमकहहीं

॥ दोहा ॥

हृदय बिचारि पराशर, कहेउ बचन परमान।
सुन्दरि सुनहु सुलोचनी, देहु मोहिं रतिदान ॥५७॥

॥ चौपाई ॥

तबकन्यामनबहुतलजानी। ऋषिसनबोलीअ[illegible]
देहगंध मम मत्स्यसमानी। मैं बाला कुछ भेद न जानी

॥ दोहा ॥

कहा देखि मोहिं रीझेउ, कीन्हो चहहु प्रसंग।
तुम्हें योग हम नाहिहैं, केहिविधि लागहुँ अंग ॥५८॥

॥ चौपाई ॥

तबऋषिबोलेबचनरसाला। यहनहिं सोचकरौतुमबाला

CC-0 Chakradhar Joshi and Sons, Nakshara Vedhshala Library, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

हम आज्ञा दीन्हा भगवती । होहु तुरत तुम यौवनवती
देह तुम्हार सुगन्ध बसाई । बास सु चार कोसलौं जाई
योजनगंधनामतेहिदीन्हा । होहु तुरत हमआज्ञाकीन्हा
ऋषी बचन को मेटनहारा । भयउ तुरत ना लागेउ बारा
कहेउ कि रति दे केवट बारी । औरौ मैं कछु कहौंविचारी

॥ दोहा ॥

कन्या बोली हर्ष के, तब आज्ञा शिर लेउँ ।
दोनों दिशा मनुष्य हैं, कैसे कै रति देउँ ॥५६॥

॥ चौपाई ॥

तबऋषिअपनेमनैंबिचारा । कुहिराजन्मभयहुतेहिबारा
[illegible]हिरा भो कहा न जाई । दिनके तुरत रात है जाई
[illegible]यम[illegible]तेहर्षवन्तमनकीन्हा । रतिरसदाननावपरलीन्हा
[illegible]रातिकछुदेरनभयऊ । ब्यासजन्मतेहिठौरहिभयऊ
जन्मभयउअरुबाढ़ीकाया । कहीनजायविष्णुकीमाया
अर्जुन सुनहु कहैं भगवाना । चार वेद मुखपाठ बखाना

॥ दोहा ॥

ब्यास जन्म तोहि भाषेऊ, सुन अर्जुन चितलाय ।
जन्म जन्म कर पातक, पढ़त सुनत छय जाय ॥६०॥

CC-0 Chakradhar Joshi and Sons, Nakshara Vedhshala Library, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

॥ चौपाई ॥

सुन अर्जुनतिनकोव्यवहारा। ऋषीउतरिगेपहिलेपारा
व्यासदेव तब बैठे जाई। परमज्योतिमहँ ध्यान लगाई
ऋषिसुन्दरिसेसबरसलीन्हा। कन्यारूपफेरितेहिदीन्हा
पुनिस्नानकरिकीन्हपयाना। तिनकोबिदाकीन्हसनमाना
सो कन्या अपने घर आई। पाराशर तब बैठे जाई

॥ दोहा ॥

दासराज नृप कन्या, मीन गर्भ अवतार।
यहिविधिजन्मेव्यासमुनि,सुनहुसोकुन्तिकुमार॥६१॥

॥ चौपाई ॥

तब अर्जुन उठि सेवा लाई। व्यास जन्म जानेउ यदुराई
सकलपुराणनव्यासबखाना। याकोअर्थकहहु [illegible]
आदिपुराण कवनप्रभुभाखा। अष्टादश बेवरा [illegible]

॥ दोहा ॥

आदि पुराण प्रभु भाषहु, मेटहु मोरा शोक।
अष्टादश पुराण महँ, केतिक हैं श्लोक॥६२॥

॥ चौपाई ॥

सुनु अर्जुन जो पूछेहु मोहीं। भिन्न भिन्नकरिभाषौंतोहीं
प्रथम ब्रह्मपुराण जो आसी। दश सहस्र हैं पद्य सतासी

CC-0 Chakradhar Joshi and Sons, Nakshara Vedhshala Library, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

पद्मपुराणअनूपजोकीन्हा। पचपनसहस्रपद्यशुभलीन्हा
तेहि पाछे भो विष्णुपुराना । तामें तेइस सहस्र बखाना
शिवपुराण सबही निर्माई । चौबिस सहस्रपद्यसुखदाई
कीन्हेपुनि भागवत पुराना । सहस्र अठारह पद्यबखाना
मुनि नारद पुराण जोभाखा । सहस्रपचीसपद्यतेहिराखा
मार्कण्डेयपुराण जो आही। नव सहस्र श्लोक हैं ताही
तेहिपाछेभो अग्नि पुराना । पन्द्रह सहस्र सुपद्यबखाना
तेहि पाछे भविष्य उपराजा । चौदह सहस्र पंचशतराजा
फेरि ब्रह्मवैवर्तपुराणा । सहस्र अठारह पद्य पुराणा
ताके पाछे बराह बखाना । चौबिस सहस्र पद्य पुराना
तेहि स्कन्दपुराण बनावा । सहस्र इकासी पद्य सुहावा
मयम[illegible]न पुराण जो आही । दस सहस्र श्लोक है ताही
[illegible]पजाया कूर्मपुराणा । सत्रह सहस्र पद्य परमाणा
मत्स्यपुराण सुरम्य बनाई । चौदह सहस्र पद्य सुखदाई
गरुड़पुराणकीन्हऋषिसत्तम । उनइस सहस्रपद्यहैउत्तम
पुनि ब्रह्माण्डपुराण बनावा । बारह सहस्र सुपद्यसुहावा

॥ दोहा ॥

एक एक कर भाषेउ, पुनि कीन्हो सब थोक ।

CC-0 Chakradhar Joshi and Sons, Nakshara Vedhshala Library, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

अष्टादश पुराण महँ, चारि लक्ष श्लोक ॥६३॥

॥ चौपाई ॥

व्यासपुराणअठारहकीन्हा।सोअर्जुनतुमसोंकहिदीन्हा
चारिलक्ष श्लोकतिनमाहीं । इनमेंघाटिबाढ़िकछुनाहीं
जोकोइ घाटिकरे मनमाहीं।लिखनहार शिरदोषकराहीं
सुनअर्जुन तोपर ममदाया। हम तुम एक दूसरी माया
तेहिकारणकछुभेदन राखा। उत्पति परलय सबमें भाखा
कहअर्जुनसुननन्दकुमारा । दासन को संकटकिमिटारा
सुनअर्जुनजेहिसङ्कटपरहीं। निश्चयमोरनामचितधरहीं
ताकर संकट काटौं जाई । दुष्ट मारि तेहि देउँ छुड़ाई
जेहि जेहिकर मैं संकटटारा। सोतोहिंभाषाकुन्तिकु[illegible]
एकसमयबिधिअवसरराजा।पानीपियनगयोगज[illegible]
तृषावन्त जल भीतर जाई। ताहिग्राह एक पकर्‍यो[illegible]
काल समानधरा असताहीं । गजकरजोरचलाकछुनाहीं
खैंचिग्राहलेचलानिदाना। गजकोकालआइनगिचाना
अतिहिकष्टगजभयोदुखारी।महाबिकलह्वैकहेसिपुकारी
कृपासिंधुमोहिं लेहुउबारी। परेउअथाहअगमजलभारी
हम सतिभामा खेलैं पासा। पुरी द्वारिका मध्यनिवासा

CC-0 Chakradhar Joshi and Sons, Nakshara Vedhshala Library, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

यहि अन्तर गजराजपुकारी । सत भामा कहपासाडारी
सत्रहसहस्रयोजनगजराजा।ताकोकाननसुनेउँअवाजा
पासा डारि चल्योंअकुलाई । सतभामा तब कहा रिसाई
केहि राखेउ को है यहि ठाईं । खेलत माया करो गुसाईं
पासा मोर परो तुम देखा । मैं अपने खेलब करि लेखा

॥ दोहा ॥

तबहि कृष्ण हँसि बोले, तुम जनि जानहु मन्द ।
ग्राह गहा गजराज कहँ, ताकर काटौं फन्द ॥६४॥

॥ चौपाई ॥

तबसतिभामाअचरजमाना। यहसमझायकहोभगवाना
मैंजानतहौं तुमहिं गोपाला । दयाधर्म तुमहीं नँदलाला
[illegible] सहस्र योजनगजराजा । ताकर कैसे सुनेउ अवाजा
[illegible]मसत्यकहहुयहबानी । मोहिंदिखावहुसारङ्गपानी
[illegible]हीं गरुड़हँकारेउ बीरा । तेहिचढ़िगयऊताहि के तीरा
ग्राह परा देखा जलमाहीं । चक्र घाव सो मारा ताहीं
हस्ती ठाढ़ रहेउ जलतीरा । थरथर काँपत सकल शरीरा
जबसतिभामादेखाजाई । तब बहुबिधि कै अस्तुतिलाई
द्रुपदसुता की लज्जाराखी । सो अर्जुन देखो तुम आँखी
संकट से प्रहलाद उबारा । सो तुम जानहु कुन्तिकुमारा

CC-0 Chakradhar Joshi and Sons, Nakshara Vedhshala Library, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

हिरणकश्यपको उदर बिदारो। अंत्रनमालगलेमहँडारो
मार्कण्डेय सुनो हम पाहीं। ब्राह्मण केनन्दनतोआहीं
तीनलोकजबपरलयभयऊ। बूड़नलगेयादमोहिंकियऊ
कहेउ कि बूड़ेसारंगपानी। गर्भान्तरराखेउँतेहिआनी
धन्य गरुड़विनतासुतभाषा। अस्सी युगपीढ़ीपरराखा
तेहिऊपरतनुसक न सम्हारी। अक्षयबटतरदीन्हउतारी

॥ दोहा ॥

व्याकुल भयो विनतासुत, जानेउ मन में बीर।
तेहिपुनि कीन्हेउ गर्वबहु, बैठि रह्यो मतिधीर ॥६५॥

अर्जुन कहे सुनो यदुराई। मेरे चित शङ्का कछु आई
तुमरे कैसे उदर समाना। संशय बड़ उपजा भग[illegible]
सुनअर्जुन तोहिंकहौंबुझाई। सबै मोहि मों सबै [illegible]
सप्त उदधिपृथ्वीनवखंडा। मेरु सुमेरु सकल ब्रह्म[illegible]
जहँलगिसृष्टिकहौंतोहिंपाहीं। तीनलोकममउदरके माहीं
विनतासुतजोबहिनीभाई। शतयोजन ताकरचकलाई
पक्षी एक गरुड़ते भाखा। पूछेउ स्वामी तुमसब राखा
तीनलोक में जो कछु आहीं। सो देखहु मेरे घट माहीं
भक्तिभाव जानेउँ मैं तोरा। तुम मौसी सुत भाई मोरा

CC-0 Chakradhar Joshi and Sons, Nakshara Vedhshala Library, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

तुममें भेद कहौं समुझाई। और के बूते जानिय जाई
अर्जुन कहै सत्य यदुराई। मैं तुम्हार मौसी सुत भाई
जातहि भेद अज्ञानहि मेटी। कुन्ती उग्रसेन की बेटी

॥ दोहा ॥

अर्जुन कहै गोसाँई जी, सो तुम करो उपाय।
तुम्हरे चरण कमल तजि, चित्त अनत ना जाय॥६६॥

॥ चौपाई ॥

अर्जुनसत्यबचनसुनमोहीं। मैं अपने हित जानौंतोहीं
बहुतभाँतिका कहौंबुझाई। नामजोमोरभजहिंचितलाई
[illegible]चितलाइनाममम जोई। तेहिसमानअर्जुननाकोई
[illegible]कोटि जोसहहिं शरीरा। नाम मोरछाड़ैनहिंवीरा
[illegible]औ द्रब्यनमनमें जानै। दुखसुखकोशंकानहिंआनै
एक जन्म दुख पावे सोई। कोटिजन्मताकहँ सुखहोई
चितदे नाम जपै जो बीरा। ताके पाप न रहै शरीरा
नाम ब्रह्म चित से धरि जाना। सो प्राणी है देव समाना
अर्जुन सत्यसुनोहमपाहीं। रामभजनबिनअरुकछुनाहीं
कोटिन तीरथब्रत जो जाना। नहिं अर्जुनहैनामसमाना

CC-0 Chakradhar Joshi and Sons, Nakshara Vedhshala Library, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

३६०
गी॰१६

॥ दोहा ॥

उदय अस्त सब जाके, चार वेद मुख जान।
कोटि कोटि गुण जाने, नाहि न नाम समान॥६७॥

॥ चौपाई ॥

सुनहु अर्जुन पाण्डु कुमारा। नाम की महिमा लिखै विधारा
कल्पवृक्ष के कलम बनाई। घासपात तब लीन्ह जलाई
राख समेटि सिंधु मह डारी। प्रथम कीन्ह बहु बिधि विस्तारी
सात समुद्र कीन्ह मसिमानी। धरती कागद कीन्ह सुहानी
लिखि लिखि सगरो भूमि सिराई। नाम की महिमा लिखी न पाई

॥ दोहा ॥

इतनी कीने सरस्वती, सुन अर्जुन चितलाय।
महिमा मोरि न जानै, कोटिन कर उपाय॥

॥ चौपाई ॥

अब सुन अर्जुन कहौं बुझाई। महिमा मोरि भक्त कछु पाई
सो भवसागर जाने कैसा। कुसुमरंग अमरावति जैसा
जो कछु तीन लोक में आही। एकौ दृष्टि न आवे ताही
सप्त पताल अपर ब्रह्मण्डा। सप्त द्वीप पृथ्वी नवखण्डा
तीन लोक अर्जुन यह वाही। जो दर्पण अस देखे ताही

CC-0 Chakradhar Joshi and Sons, Nakshara Vedhshala Library, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

चंद्रसूर्य दीपक अस जानै। कामदेव मर्कट सम मानै
धनदसमानधनीकोउआही। दुखिया समजानैतेवाही
उनचासकोटिमरुतहैकैसा। नासापवन बहत है जैसा
अर्जुन सुनो कल्पतरु जोई। जाने एक बृक्ष है सोई
सात समुद्र नीर अतिभारा। सो जानत है चुल्लू धारा
इन्द्र समान राज नहिं कोई। रंक सम न बुझावै सोई
गिरिसुमेरुको मनसों कहहीं। ढेला एक धराजनुअहहीं
हिमगिरि कहँ मानहिंवेकैसे। अतिहीलघुएककीट हैजैसे
बरुणहि ते जानत हैं कैसा। जल में एक कीट है जैसा
बृहस्पति को मूर्ख कै मानै। पुष्प सदृश तारागण जानै
[illegible] दृष्टिन आवत ताही। नरबरै केहि गिनती माही

॥ दोहा ॥

अर्जुन कहा गोसाँई जू, वह कीजै परकास।
जन्म जन्म मन चितरहे, हरि के चरणकीआस॥६६॥

॥ चौपाई ॥

अर्जुनसत्यबचन सुनमोहीं। गीता ज्ञान कहों में तोहीं
आवागमन तोर नशि जाई। कोटिजन्मकरपापनशाई

CC-0 Chakradhar Joshi and Sons, Nakshara Vedhshala Library, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

छौशास्त्रमथिकैंजब लीन्हा। रामरतन गीतातब कीन्हा
श्रीमुखमैंभाष्योतोहिजोई। तेहिसमानजगमेंनहिंकोई
ताके गुणसुनि कुन्तिकुमारा। जब यह ग्रन्थ चले संसारा
कथा ठौर बैठे जो कोई। ताहि मोक्ष की प्राप्ती होई
राखै सुर पुराण यह गीता। क्षत्रिय पढ़ै सोरणमहँजीता
संत असंत पढ़ै जो कोई। ज्ञानवन्त उत्तम गति होई
चित देके जो पढ़ै सुनावै। यमदूतन्ह नहिंताहिडेरावै
निश्चयमन जे पढ़तेरहई। जहाँ जात चिन्ता नहिकरई
गीता पढ़ै सुने जो कोई। बुद्धि होय तो छूटै सोई
आधिव्याधिहै जाके अंगा। गीतापढ़त तजतसोसंगा
दुष्ट चोर ठग तहाँ न रहई। राजा प्रजा की रक्षा [illegible]
जेतिकगुणगीतामेंआही। आदिअंतकहिसकौंन [illegible]
तीन दिवस जोपढ़ैसुनावै। कोटिकोटिगुणकहतन [illegible]
देवन करैं पाठ यह गीता। मानव पढ़ै सुनै यह [illegible]
दुख दरिद्र सब जात पराई। गीता पढ़ै सुनै मन लाई
रामरत्न गीता प्रभुभाखा। परम तत्त्व अर्जुन करिराखा
श्रीमुख गीता पूरणभयऊ। अर्जुनकरसंशयमिटिगयऊ
अर्जुन कृष्णगूढ़यह कीन्हा। राम रत्नभाषाकरिदीन्हा

CC-0 Chakradhar Joshi and Sons, Nakshara Vedhshala Library, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

॥ दोहा ॥

श्रीगोविन्द औ पार्थ मिलि, परम गूढ़ यह कीन्ह ।
तिनके चरण कमल चित, कुशलसिंह चित दीन्ह ॥

❋ इति ❋



CC-0 Chakradhar Joshi and Sons, Nakshara Vedhshala Library, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

CC-0 Chakradhar Joshi and Sons, Nakshara Vedhshala Library, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

उपनिषदों का सेट

[अनुवादक—रायबहादुर बाबू ज़ालिमसिंहजी]

जिसे पाकर कुछ भी पाने को नहीं रहता, जिसे जानकर कुछ भी जानने को नहीं रह जाता, जिसे प्राप्त करने के लिए बड़े-बड़े चक्रवर्ती सम्राटों ने वसुंधरा के साम्राज्य को तृणवत् त्याग दिया, उसी परम पुनीत ब्रह्म-विद्या के मुख्य स्रोत समस्त उपनिषदें हैं। यों तो उपनिषदों की संख्या ११५ से भी अधिक है, पर उनमें से १० मुख्य हैं। उन दसों उपनिषदों की टीका—सुन्दर टाइप और पुष्ट काग़ज़ में, बड़ी सुन्दरता-पूर्वक, छपी तैयार है। टीका का क्रम यह है। पहले मूल, फिर पदच्छेद, फिर दो कालमों में संस्कृत अन्वय और प्रत्येक शब्द के आगे हिंदी-अर्थ और सबके नीचे सरल हिंदी में भावा[illegible] इतनी सरल शैली से उपनिषदों की टीका कहीं नहीं छपी। पृष्ठ और मूल्य इस प्रकार है।

	नाम	पृष्ठ-संख्या	मूल्य		नाम	पृष्ठ-संख्या	मूल्य
(१)	ईश	३६	≡)	(६)	मांडूक्य	२२	≡)
(२)	केन	४४	≡)॥	(७)	ऐतरेय	५८	।)॥
(३)	कठ	१३८	॥)	(८)	तैत्तिरीय	१३६	॥≡)
(४)	प्रश्न	६६	॥)	(९)	छांदोग्य	६७२	३।)
(५)	मुंडक	६४	॥)	(१०)	बृहदारण्यक	७५०	३)

भगवद्गीता

मूल संस्कृत तथा रायबहादुर बाबू ज़ालिमसिंहजी-कृत टीका-सहित। टीका का क्रम उपनिषदों के समान है। पृष्ठ-संख्या ८७६ मूल्य सजिल्द २)

नोट—अन्यान्य ग्रंथों के लिए बड़ा सूचीपत्र मुफ़्त मँगाकर देखिए।

मिलने का पता—मैनेजर, नवलकिशोर-प्रेस, (बुकडिपो), हज़रतगंज, लखनऊ.

Printed by K. D. Seth at the N. K. Press, Lucknow.

CC-0 Chakradhar Joshi and Sons, Nakshara Vedhshala Library, Dev Prayag. Digitized by eGangotri